International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 2, Mar.-Apr., 2024, pp: 931-935 www.ijhssm.org

सम्राट् ललितादित्य द्वारा स्थापित परिहासपुर नगर एवं उसमें निर्मित प्रमुख पाँच मन्दिर : राजतंरङ्गिणी सन्दर्भ में

पूजा ठाकुर
संस्कृत–विभाग
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
समरहिल, शिमला–171005

डॉ॰ लता देवी
सहायक आचार्य
संस्कृत–विभाग
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
समरहिल, शिमला–171005

Date of Submission: 01-04-2024 Date of Acceptance: 09-04-2024

सारांष

कश्मीर कार्कोट शासक ललितादित्य का नाम भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है, उसका शासन काल लगभग आठवी शताब्दी के आसपास रहा है। उसके समय में कश्मीर एक शक्तिशाली राज्य के रूप में उभरा था। ललितादित्य ने अपने जीवन का अधिकांश समय युद्ध क्षेत्रों में व्यतीत किया, परन्तु फिर भी उसने कश्मीर में निर्माण कार्य को किसी भी प्रकार से उपेक्षित नहीं होने दिया। कल्हण लिखते है कि इस जगतीतल पर कोई भी ऐसा नगर, गांव, नदी, समुद्र, द्वीप नहीं रह गया था जहां उसने निर्माण कार्य न करवाया हो। उसने कश्मीर में बहुत से मन्दिरों, मठों, प्रसादों, मूर्तियों एवं नगरों का निर्माण किया, जिसके ध्वंसावशेष आज भी कश्मीर में उसकी महान् गाथा को सुनाते है। ललितादित्य ने आठवी सदी में कश्मीर में परिहासपुर नामक नगर की स्थापना की थी और उस नगर में परिहास केशव, मुक्ताकेशव, वराह भगवान, श्रीगोवर्धनदेव, राजविहार का निर्माण करवाया था और इन पांचों का निर्माण लागत एक समान थी।

इस अध्ययन का मुख्य उद्देष्य सम्राट् ललितादित्य द्वारा परिहासपुर की स्थापना, विकास और महत्व को विस्तृत रूप से विश्लेषण करना है। परिहासपुर की स्थापना का सम्बन्ध कश्मीर के विकास से है, जो ललितादित्य के शासन काल में एक समृद्धि की अवधारणा थी। इसके साथ ही यह अध्ययन परिहासपुर के महत्व को भी प्रकट करेगा, जो कश्मीर के सांस्कृतिक और आर्थिक विकास में एक उल्लेखनीय योगदान का प्रतीक बना। परिहासपुर की स्थापना राजा ललितादित्य द्वारा एक ऐतिहासिक घटना के रूप में माना जाता है जो कश्मीर के सांस्कृतिक, आर्थिक और समाजिक विकास का प्रमुख आधार बना। इसके माध्यम से राजा ललितादित्य ने न केवल अपने राज्य के समृद्धि के संकेत दिया बल्कि भारतीय इतिहास में अपनी विशेष पहचान बनाई।

कूट शब्द : ललितादित्य, परिहासपुर, परिहासकेशव, मुक्ताकेशव, वराह भगवान, गोवर्धनधर, राजविहार।

भूमिका

संस्कृत भाषा को भारत की प्राचीनतम भाषा माना गया है। संस्कृत भाषा का साहित्य विश्व की किसी भी अन्य भाषा की तुलना में कही अधिक विस्तृत है और इस साहित्य को वैदिक एवं लौकिक साहित्य में विभाजित किया गया है। लौकिक साहिय की अनेक विश्व प्रसद्धि रचनाओं में कल्हण कृत राजतरङ्गिणी विशेषतम स्थान रखता है। राजतरङ्गिणी एक ऐतिहासिक ग्रन्थ है इसमें कश्मीर के महाभारत काल से लेकर 12वीं शताब्दी तक के राजाओं का क्रमबद्ध वर्णन किया है। इसी क्रम में सातवीं शताब्दी में दुर्लभवर्धन नामक व्यक्ति ने कश्मीर में कार्कोट राजवंश की स्थापना की इसी वंश में पांचवें राजा हुये सम्राट् मुक्तापीड ललितादित्य। उनका शासन काल आठवीं शताब्दी के लगभग रहा है। कल्हण के अनुसार उस विजयेच्छुक राजा का अधिकांश जीवन विजय यात्रा में व्यतीत हुआ, परन्तु फिर भी उसनें कश्मीर में निर्माण कार्य को किसी भी प्रकार से अपेक्षित नहीं होने दिया। राजा ललितादित्य ने कश्मीर में बहुत सारे नगरों, मन्दिरों, मठों, मूर्तियों का निर्माण करवाया था, जिनमें परिहासपुरएवं मार्तण्ड मन्दिर अद्वितीय स्थान रखते है।

परिहासपुर स्थापना

सम्राट् ललितादित्य ने कश्मीर में बहुत से नगरों का निर्माण किया था। उसने साधारणतः अपनी कृतियों का नामकरण भी अपने कार्यों एवं विशिष्ट अवसरों के अनुरूप किया था। जब उस सम्राट् ने दिग्विजय यात्रा करने का निश्चय किया, तो सुनिश्चितपुर नामक नगर की स्थापना की और दिग्विजय से लौटने के पश्चात् दर्पितपुर नामक नगर बसाया। दर्पितपुर का निर्माण उसके स्वाभाविक दर्प का परिणाम था। जहां से उस राजा ने फल प्राप्त किये, वहां फलपरु की स्थापना

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 2, Mar.-Apr., 2024, pp: 931-935 www.ijhssm.org

एवं जहां से पत्तों (पर्ण) को निकाला वहां पर्णोत्सर तथा क्रीडा के समय क्रीडाराम की स्थापना की थी।[1]

इसी क्रम में उस सम्राट ने परिहास के अवसर में परिहासपुर नामक नगर की स्थापना की उसका वैभव इन्द्र की नगरी अमरावतीपुरी से भी अधिक था। ऐसा बताया गय है परिहासपुर कश्मीर घाटी में श्रीनगर से 22 किलोमीटर (14मील) उत्तर–पश्चिम में एक छोटा सा शहर था। यह झेलम नदी के ऊपर एक पठार पर बनाया गया था।[2] परिहासपुर एक संस्कृत नाम है। परिहास का अर्थ है हँसी और पुर का अर्थ है नगर।[3] हंसी का नगर या हसीं में बनाया गया नगर।

परिहासपुर का आकार एक द्वीप तुल्य है, उसकी चारों दिशा में नीची भूमि है। राजा ललितादित्य ने परिहासपुर नगर बसाने के लिये सैनिक और तीर्थ दोनों दृष्टियों से काम लिया था। सामरिक दृष्टि से यह अन्दरकोट से अधिक सुरक्षित एवं उपयोगी स्थान था। परिहासपुर पवित्रता की दृष्टि से चारों ओर से तीर्थों से घिरा था। सिन्धु विरस्ता के समीप होने के कारण नाविक परिवहन के साथ ही साथ वारहमूला गुरेज की सड़क जो कश्मीर की सीमान्त तक जाती है, जहां से शत्रुओं का देश में प्रवेश का भय था, मध्य में पड़ता था। यह स्थान जल एवं स्थल दोनों मार्गों से जुड़ा था। ऊँचाई पर होने के कारण जलप्लावन से जो कि कश्मीर का पारम्परिक शत्रु है, उससे भी सुरक्षित था। चारों ओर जलाशय परिहासपुर की प्राकृतिक खाई बनाता है ऊँचाई पर होने के कारण उपत्यका में प्रवेश करते शत्रु सेना को अविलम्ब देखकर उसके प्रति सजग हुआ जा सकता था।[4] राजा ललितादित्य ने परिहासपुर को अपनी राजधानी बनाया और उसका पुत्र वजादित्य वहां से राजधानी उठा ले गया।[5] सम्राट् ललितादित्य के 150 वर्षों के पश्चात् शंकरवर्मा कश्मीर का राजा हुआ, उसने नवीन राजधानी पाटन में स्थापित की और वह परिहासपुर में लगे पत्थरों को नवनिर्माण के लिये उठा ले गया।[6] परिहासपुर आधुनिक पार्सपोर है। अभी भी परिहासपुर में उस राजा द्वारा स्थापित नगर के ध्वसांवशेषों को देखा जा सकता है। यह भारत का एक पुरातात्विक स्थल है। इसे स्थानीय भाषा में परसपुर एवं कानी शहर (पत्थरों का शहर) भी कहा जाता है। यह केन्द्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर के बारामूल जिलें के पतन तहसील में स्थित है। इसके खण्डहर एक बड़े क्षेत्र में फैले हुये है और इस महान् संरचना के अवशेषों को देखकर पता चलता है कि ये अपने समय में शानदार वास्तुकला के नमूने रहे होंगे।[7] यहाँ की मुख्य संरचना मार्तण्ड के महान् सूर्य मन्दिर से भी काफी बड़ी है। यहां प्राप्त कुछ बेहतरीन आकृतियों को श्रीनगर के प्रतापसिंह संग्रहालय में रखा गया है। डॉ॰ रघुनाथ सिंह लिखते है कि स्टीन ने दो बार कश्मीर की यात्रा की थी। परिहासपुर के प्रथम दौरे में जो पत्थर/भग्नावशेष देखे थे, उन्हें अपनी दूसरी यात्रा में गायब पाते हैं।[8] उस समय कश्मीर में डोगरा राजा जेहलम कोर्ट रोड का निर्माण करवा रहे थे और निर्माण के लिये परिहासपुर के पत्थर का प्रयोग किया जा रहा था। स्टीन ने कश्मीर राजा के दरबार में ब्रिटिश रेजिमेंट से सम्पर्क किया और वे उसके नासमझीपूर्ण विनाश को समाप्त करने के लिये मनाने में सक्षम रहें, इसलिए आज तक परिहासपोर की प्रेत वाधित उपस्थिति है।[9]

वर्ष 2021 राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण (NMA) ने जम्मू कश्मीर के महत्त्वपूर्ण हिन्दु और बौद्ध स्मारक स्थलों का विस्तृत सर्वेक्षण शुरू किया था। यह प्रयास कश्मीर के ऐतिहासिक स्थलों को युनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल करने के लिये किया गया था। यह सर्वेक्षण (NMA) अध्यक्ष तरूण विजय ने जम्मू कश्मीर के अभिलेखागार पुरातत्व और संग्रहालय निदेशालय के अधिकारियों के साथ मिलकर किया, उन्होंने हिन्दु, बौद्ध और अन्य स्मारक स्थलों जैसे रेनावारी, मार्तण्ड मन्दिर, अंवतीपोरा, हारवन बौद्ध स्थल, परिहासपोरा, पट्टन नारानाग के मन्दिरों के साथ श्रीनगर में स्थित श्री प्रताप सिंह संग्रहालय सहित अन्य स्थलों का निरीक्षण किया था। यह घाटी में अपनी तरह का पहला अभ्यास 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना को बढ़ावा देने जम्मू और कश्मीर के सांस्कृतिक गौरव को पुनर्जीवित और बहाल करने के लिये प्रधानमन्त्री जी के दृष्टिकोण का परिणाम है, राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण तरूण विजय के अनुसार इन स्मारकों के संरक्षण के लिये तत्काल कदम उठाए जाने जरूरी है, अध्यक्ष ने कहा कि (NMA) ने यहां कई स्मारकों के लिये युनेस्को की विश्व धरोहर स्थल का दर्जा हासिल करने हेतु एक अच्छी योजना तैयार कर रहा है। मार्तण्ड, परिहासपोर, नारानाग और हारवन उन प्रमुख स्थलों में से है, जो युनेस्कों की विश्व धरोहर स्थलों की स्थिति के योग्य है।[10]

---

1 ततः परं परीहासशीलो भूलोक वासवः।
विहसद्वासवावासं परिहासपुरं व्यधात।।
राजतरङ्गिणी, 4.194

2 https://en.m.wikipedia.org

3 https://www.jatlanel.com

4 जोनराजकृत राजतरङ्गिणी, परिशिष्ट–ख, पृ॰ 543

5 परिहासपुरात्पित्र्यां नानोपकरणावलीम्।
स जहार दुराचारो भू भृल्लो भवशंवद।।
राजतरङ्गाणी, 4.395

6 स्वल्पसत्त्वो नरपतिः स्वपुरख्यापनाय सः।
सारापहारमकरोत्परिहास पुरस्य यत।। वही, 5.161

7 https://en.m.wikipedia.org

8 जोनराजकृत राजतरङ्गिणी, परिशिष्ट–ख, पृ॰ 545

9 वही, पृ॰ 544

10 https://www.amarujala.com

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 2, Mar.-Apr., 2024, pp: 931-935 www.ijhssm.org

परिहासपुर में स्थापित मन्दिर

कल्हण वर्णन करते है कि परिहासपुर नगर बसाने के साथ ही उस राजा ने उस नगर में बहुत मन्दिरों का भी निर्माण करवाया था।[1] परिहासपुर से प्राप्त मूर्तियों का एक संग्रह श्रीनगर प्रतापसिंह संग्रहालय में है।[2]

परिहासपुरकेशव स्थापना

उस सम्राट् ने परिहासपुर नगर में परिहास केशव की रजतमयी मूर्ति स्थापित की और भगवान परिहास केशव का स्वरूप क्षीरशायी विष्णु के मुक्तामय आभूषणों की ज्योति से उज्जवल शरीर की तरह चमकीला था।[3] उस शुद्ध बुद्धि राजा ने चौरासी हजार तोलें चांदी का उपयोग करके परिहासकेशव की प्रतिमा का निर्माण करवाया था।[4] परिहासपुर का नामकरण परिहासकेशव के नाम पर किया गया है, वही नगर देवता थे एवं सर्वप्रथम उन्हीं का मन्दिर निर्माण हुआ होगा। कल्हण ने भी परिहासपुर नगर के पश्चात् सर्वप्रथम परिहासकेशव का नाम लिया। परिहासकेशव की रजतमयी प्रतिमा को राजा हर्ष उठा ले गया था[5] और उच्चल ने राजा बनने पर पुनः प्रतिमा स्थापित की।[6]

मुक्ताकेशव स्थापना

ललितादित्य ने मुक्ताकेशव नामक विष्णु भगवान की एक स्वर्णमीय मूर्ति की भी स्थापना की थी जो विष्णु की नाभि से जायमान कमल की केसर सरीख पीतवर्ण के समान थी।[7] उसने मुक्ताकेशव (विष्णु) की प्रतिमा में चौरासी हजार तोले सोने के प्रयोग से किया था।[8] पीर हसन लिखता है परिहासकेशव और मुक्ताकेशव के मन्दिर मिसमार करा दिये और इनके पत्थर दरपा के बन्दों में सर्फ कर दिये।[9]

वराह भगवान स्थापना

उस सम्राट् ने परिहासपुर में ही वराह भगवान की स्वर्ण कवच धारिणी प्रतिमा स्थापित की थी। जो पाताल लोक में विद्यमान गहरे अन्धेरे को नष्ट करने के लिये प्रभासम्पन्न सूर्यनारायण के समान देदीप्यमान दिखती थी।[10] कल्हण में वर्णन मिलता है कि एक समाज लागत से उसने इन सभी मूर्तियों के लिये उतने ही श्रेष्ठ, उतने ही विशाल और उतने ही सुन्दर चैत्य (मन्दिर) बनवाये थे।[11]

श्रीगोवर्धन देव स्थापना

इसी प्रकार उसने अपनी राजधानी में ही गोकुल की गौओ के दुग्ध की भांति स्थापित की थी।[12] गोवर्धनधर (कृष्ण) की चांदी की मूर्ति अपने श्वेत रंग में दुग्ध–धार में निर्मित प्रतीत होती थी। गुरदन उदर पर स्थित मन्दिर का ध्वंसावरोप गोवर्धनधर है। गुरदन शब्द गोवर्धन धर का अपभ्रंश है।[13]

गुरूड़ स्तम्भ स्थापना

राजा ने चौवन हाथ ऊँचा एक पाषाण स्तम्भ बनवाकर उसके सिरे पर सर्पो के शत्रु गरूड़ जी की स्थापना की थी।[14] दक्षिण भारत तथा नेपाल में विष्णु मन्दिरों में भगवान की मूर्ति के सामने गरूड़ स्तम्भ लगा मिलता है। शताब्दियों पहले मुहम्मद आजिम तथा नारायण कौल ने कश्मीर में भग्न गरूड़ स्तम्भ देखा था।[15]

---

1 ततः परं परीहासशीलो भूलोकवासवः।
विहसद्वासवावासं परिहासपुरं व्याधात्।।
राजतरङ्गिणी, 4.194

2 जोनराजकृत राजतरङ्गिणी, परिशिष्ट–ख, पृ॰ 545

3 विरेजे रजतो देव श्रीपरीहासकेशवः।
लिप्तो रत्नाकर स्वापे मुक्ताज्योति भरेरिव।।
राजतङ्गिणी, 4.195

4 तावन्त्येव सहस्राणि पलानां राजतस्य च।
संधाय शुद्धधीश्चक्रे श्रीपरीहासकेशवम्।। वही, 4.202

5 तन्मध्येतिदरिद्रो ऽपि संप्राप्तं स ररक्ष यत्।
तमुत्पाटयानयद्राजा श्रीपरीहासकेशवम्।।
राजतरङ्गिणी, 7.1344

6 हर्षदेवेन यो निन्ये श्रीपरीहासकेशवः।
परिहासपुरे तं स नवं नरपति र्व्यधात्।। वही, 8.79

7 नाभी नालेन किञ्जल्कपुञ्जेनेवानुरञ्जितः।
अचकात्काञ्चनमयः श्रीमुक्ताकेशवां हरिः।। वही, 4. 196

8 महावराहः शुशुभे काञ्चनं कवचं दधत्।
पाताले तिमिरं हन्तु विहन्निव रवि प्रभा।। वही, 4. 197

9 जोनराजकृत राजतरङ्गिणी, श्लोक 600, पाद टिपपणी, पृ॰ 360

10 महावराहः शुशुभ काञ्चनं कवचं दधत।
पाताले तिमिरं हन्तुं विहन्निव रवि प्रभाः।।
राजतरङ्गिणी, 4.197

11 चतुः शालां च चैत्यं च तावता तावता व्यधात्।
धनेनैवेति तस्यासन्पञ्च निर्मितय समाः।। वही, 204

12 गोवर्धनधरो देवो कारिता।
यो गोकुलपयः पूरैरिव पाण्डुरतां दधे।।
राजतरङ्गिणी, 4.198

13 जोनराजकृत राजतरङ्गिणी, परिशिष्ट–ख, पृ॰ 544

14 चतुष्पञ्चाशतं हस्तान्त्रोपयित्वा महाशिलाम्।
हवेजाग्रे दिति जारातेस्तार्क्ष्यस्तेन निवेशितः।।
राजतरङ्गिणी, 4.199

15 जोनराजकृत राजतरङ्गिणी, परिशिष्ट–ख, पृ॰ 544

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 2, Mar.-Apr., 2024, pp: 931-935 www.ijhssm.org

राजविहार स्थापना

उस निराभिमानी राजा ने बड़े–बड़े चौमहलें भवनों विस्तृत चैत्यों एवं विशाल जिन (बुद्धि) मुर्तियों से युक्त एक राजविहार का भी निर्माण करवाया था और उस विहार में उस राजा ने चौरासी हजार तौले सोने का उपयोग किया।[1] भगवान बुद्ध की आकाश व्यापी विशाल मूर्ति को उसने चौरासी हजार प्रस्थ (सेर) कांसे से बनवाया था।[2] राजविहार की बुद्ध मूर्ति को राजा हर्ष उठा ले गया था और उसको गला कर उसकी मुद्रा रंकित करवायी। राजा ललितादित्य स्वयं हिन्दू होते हुये भी बौद्ध भिक्षुओं और विषयों प्रति उदार था।[3]

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं कि आठवी शताब्दी में कश्मीरी सम्राट् मुक्तापीड ललितादित्य ने अपनी विजय यात्राओं के द्वारा पूरे भारत में अपना लोहा मनवाया था। उसने जीते गये युद्धों से जो धन प्राप्त किया, उस धन से कश्मीर में बहुत से नगरों एवं देवमन्दिरों का निर्माण करवाया था। राजा ललितादित्य ने कश्मीर में परिहासपुर नामक एक नगर स्थापित किया था। वह नगर अपने वैभव से इन्द्र की अमरावतीपुरी का भी ह्रास करता था। उसी नगर में परिहासपुर, मुक्ताकेशव, वराह भगवान, गोवर्धन देव एवं राजविहार पांच मन्दिरों का निर्माण करवाया। इनमें चार तो विष्णु भगवान के थे, परन्तु एक बौद्ध बिहार था। इन पांचों के निर्माण में उसने एक समान धन व्यय किया। उसके बाद के शासकों एवं इम्लामीकरण के चलते उस नगर को नष्ट किया गया था, परन्तु उस नगर के भग्नावशेषों को अभी भी कश्मीर में देखा जा सकता है, जो हमारी सांस्कृतिक धरोहर के रूप में स्थित है। राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण ने 2021 में कश्मीर में बहुत से धार्मिक स्थलों सहित परिहासपोर का भी निरीक्षण किया था। मार्तण्ड एवं परिहासपोट के साथ कुछ अन्य स्थल जो युनेस्कों विश्व धरोहर की स्थिति योग्य है, उसके लिये योजना तैयार की।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कन्नौज का इतिहास तथा महाराज जयचन्द्र की सत्य कहानी, लेखक : आनन्द स्वरूप मिश्र प्रकाशक : विनोद चन्द्र पाण्डेय निदेशक उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
2. जोनराजकृत राजतरङ्गिणी, भाष्यकार : डॉ॰ रघुनाथ सिंह प्रकाशक : चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन वाराणसी।
3. राजतरङ्गिणी कोश, लेखक : रामकुमार राय, प्रकाशक : चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी।
4. श्रीकल्हणमहाकविविरचिताराजतरङ्गिणी, व्याख्या, श्री रामतेजशास्त्री पाण्डेय, प्रकाशक : चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, नई दिल्ली।

Web Site

5. https://en.m.wikipedia.org
6. https://www .jatland.com
7. https://www.amarujala.com

[1] चक्रे बृहच्चतुशाला बृहच्चैत्यबृहज्जिनैः।
राजा राजविहारं स विरजा सततोर्भितम्।।

[2] रीति प्रस्थ सहस्रैस्तु तेन तावद्भिरेव सः।
व्योम व्यापिवपुः श्रीमान्बृहदबुद्धो व्यधीयता।।
राजतरङ्गिणी, 4.200, 203

[3] डॉ॰ विशुद्धानन्द पाठक, उत्तर भारत का राजनीतिक इतिहास, पृ॰ 193